कत्थक नृत्य में राधा–कृष्ण प्रेम का चित्रण

चारू हाण्डा

शोधार्थी, संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

E-mail: charuhanda89@yahoo.com

भारतीय नृत्यकला अत्यन्त पुरानी कला है, जिसका विस्तार नाट्य–वेद में हुआ है। उसी के आधार पर भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में नृत्यकला को विस्तार से समझाया है। उसमें शास्त्रीयता के साथ–साथ लोक तत्वों के मिश्रण से कुछ नई शैलियों का जन्म हुआ, जैसे –भरतनाट्यम, ओडिसी, मोहिनीअट्टम, कथकलि, मणिपुरी और कत्थक आदि।

कत्थक नृत्य– कत्थक नृत्य उत्तर भारत का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है। विदेशी आक्रमणों के कारण यहाँ की संस्कृति में अनेक मिश्रण हुए। इसलिए अनेक प्रकार की वेशभूषा व विविध प्रकार की कलाओं ने यहाँ जन्म लिया। इन्हीं विविध विशेषताओं से कत्थक नृत्य के तीन घराने भी विकसित हुए जो क्रमशः जयपुर घराना, लखनऊ घराना व बनारस घराना के नाम से जाने गए।

'कथा कहे सो कत्थक कहावे।'

कथा का गायन करने वाले 'कत्थक' कहलाए जिन्होंने 'नटवरीनृत्य' नाम से एक ऐसी शैली को जन्म दिया, जिसमें भाव प्रधान और चमत्कार–प्रधान तत्वों का समावेश था। शास्त्रीय आधार पर कत्थक नृत्य में गत, तोड़े, परण, चक्रदार परण, नायक–नायिका भेद और तत्कार आदि तथा लोकरंजन की दृष्टि से एक या अनेक घुँघरूओं की आवाज़, ताल–वादक् के साथ प्रतिस्पर्धा और ब्रज की रासलीला के तत्वों का समावेश मिलता है।

कत्थक नृत्य के तीनों घरानों में गत निकास, गतभाव, ठुमरी, कवित्त आदि नाचे जाते हैं जिनमें पूर्ण रूप से राधा–कृष्ण प्रेम चित्रित होता है।

राधा–कृष्ण प्रेम स्वरूप

श्री कृष्ण तो सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त हैं और यह सृष्टि ही उनकी लीलास्थली है। पुरूष और प्रकृति की रति के चरमोत्कर्ष काल में या महाप्रलय के समय सब कुछ कृष्ण में समाहित हो जाता है। सृष्टि का उदय और विलय कृष्ण रूपी ब्रह्म का ही विलास है। कृष्ण ब्रह्म है, जीव राधा है और वृत्तियाँ गोपियाँ हैं। कृष्ण और राधा योग की भाषा में परमात्मा (शिव) और कुंडलिनी (शक्ति) का मिलन है। भगवान श्री कृष्ण व राधा ने वृंदावन में रास रचाकर राधा–कृष्ण युगल प्रेम स्वरूप में समस्त सृष्टि को बांध दिया। जिस प्रकार भगवान शिव ने ताण्डव व देवी पार्वती ने लास्य किया उसी प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने राधा व गोपियों के साथ मिलकर मधुबन मे महारास रचाया। 'रास' भगवान श्री कृष्ण की श्रृंगार–प्रधान भावनाओं का द्योतक है।

2454-342x electronic ISSN

'नाट्यशास्त्र' में महर्षि भरत ने रास के तीन भेद बताए हैं:– 'ताल रासक', 'दण्डरासक' और 'मण्डल रासक'।

महारास

श्री वृन्दावन धाम में, कार्तिक पूर्णिमा को, यमुना के किनारे, शुभ्र चंद्रिका में श्री कृष्ण और ब्रज–गोपियों के संयोग से सम्पन्न मंडलाकार नृत्य को महारास की संज्ञा दी जाती है। श्रीमद्‌भागवत् की 'रासपंचाध्यायी' में इसका विशद वर्णन प्राप्त होता है।

कार्तिक पूर्णिमा की धवल ज्योत्सना से आहलादित होकर भगवान् कृष्ण को रास क्रीड़ा करने की इच्छा उत्पन्न हुई। उन्होंने यमुना तीर पर उसी समय मुरली की ऐसी मधुर तान छेड़ी जिसे सुनकर ब्रजांगनाएँ विहवल हो गईं, और वे जिस अवस्था में थीं, उसी में वंशी–ध्वनि की ओर उन्मुक्त होकर दौड़ पड़ी। कृष्ण को वंशी वादन करते देख गोपियाँ आनन्द सिंधु में डूबने लगीं तथा उनसे रास–नृत्य करने की मनुहार करने लगीं। भगवान् ने उनकी इच्छा पूर्ण की और दो गोपियों के बीच एक कृष्ण – इस प्रकार मंडल रास संपन्न किया। इस अलभ्य अवसर के प्राप्त होने पर, त्रिलोक के स्वामी को अपने वशीभूत समझकर गोपियों को रास के मध्य में ही गर्व उत्पन्न हो गया। फलतः गर्वहारी भगवान् तुरन्त अन्तर्धान हो गए। भगवान् के इस प्रकार आलोप हो जाने पर गोपियों को भयंकर वेदना हुई। वे विरहाग्नि से दग्ध होकर पछाड़ खाने लगीं तथा कुछ गोपियाँ वन में इधर–उधर दौड़ते हुए उन्हें खोजने का प्रयास करने लगीं। विरह–व्यथा को शमन करने हेतु एक गोपी स्वयं कृष्ण बनकर अन्य गोपियों के साथ रासलीला का अनुकरण करने लगीं। कुछ दूर जाकर गोपियों को श्री कृष्ण के चरण–चिह्न दिखाई दिए, साथ ही एक नारी के चरण–चिह्न भी दृष्टि गोचर हुए। गोपियों ने समझा कि कृष्ण अपनी किसी आराधिका के साथ एकांत में क्रीड़ा करने चले गए। आगे चलकर गोपियों ने राधा जी को भी विहवल अवस्था में देखा। पूछने पर ज्ञात हुआ कि उन्हें भी कृष्ण के साथ रास क्रीड़ा करते हुए गर्व हो गया था, इसलिए भगवान् उन्हें भी छोड़कर अन्तर्धान हो गए हैं। अब तो श्री राधा जी के सहित समस्त गोपियाँ कृष्ण की याद में उनकी लीलाओं का स्मरण करती हुई आर्तनाद करने लगीं तथा कृष्ण–स्मृति–सिंधु में डूबकर कृष्णाकार हो गईं। उनके हृदय का गर्व जलकर क्षार हो गया तथा निर्मल और निश्च्छल भक्ति–प्रेम का उदय हो गया। तब भगवान् पुनः सब गोपांगनाओं के समक्ष प्रकट हुए तथा शेष रात्रि–भर रास क्रीड़ा सम्पन्न हुई। भागवत्कार ने इसी को महारास कहा है।

रास नृत्य पूर्णतः राधा–कृष्ण प्रेम पर आधारित है। कत्थक नृत्य भी रास का एक अंग है।

कत्थक नृत्य में राधा–कृष्ण प्रेम पर आधारित विविध पक्ष

कत्थक नृत्य में राधा–कृष्ण प्रेम का ही वर्चस्व रहता है। कत्थक नृत्य के विभिन्न पक्ष राधा–कृष्ण लीलाओं व उनके प्रेम को ही उजागर करते हैं। कत्थक नृत्य में कवित्त, ठुमरी, गतनिकास व गतभाव में मुख्यतः राधा–कृष्ण संबधी कथानकों का वर्णन रहता है।

कवित्त एवं राधा–कृष्ण प्रेम चित्रण

कत्थक नृत्य में कवित्त की अपनी विशेषता है। कत्थक नृत्य के कवित्त भगवान श्री कृष्ण संबंधित होते हैं। उनकी लीलाओं पर आधारित अनेक कवित्त कत्थक नृत्य में नाचे जाते हैं।

माखन चोरी पर आधारित कवित्त

कृष्ण सखा मिल गए गए ग्वालन घर
हिरत फिरत घर देख लियो तब
ग्वालके कांधे चढ़ माखन उतार लियो
और खाय लियो दधकी मटकी झटकी पटकी
और दूध को पियो बिखेर दियो
पकड़ लियो राधा ने जब तब
ग्वाल बाल सब भाग गए दधि खाय गए
देखो नारायण ताल बजाय के नाचन लागे
किट थेइया थेईया थेई, किट थेईया थेईया थेई
किट थेइया थेईया ता।

रास–नृत्य पर आधारित कवित्त

1) यमुना के तट पर कृष्ण कन्हैया
बंसी बजावत रास रचावत
राधा–कृष्णा दोऊ मिल नाचत
ताऽ थूंगा तक्का थूंगा तिग्धेऽता
तक्का थूंगा दिगदिग दिगदिग दिगदिग
थेईऽ तततत थेईतत ततथेई तततत
थेईऽ दिगदिग थेईऽ तततत थेईतत
ततथेई तततत थेईऽ दिगदिग थेईऽ
तततत थेईतत ततथेई तततत थेई
दिगदिग ता।

2) वृंदावन में रास रचावत
गोपियन के संग नाचत गावत

पग में नुपुर झननन झननन

किटथेईता थेई किटथेईताथेई किटथेईताथेई

3) शीश मुकुट बंसी मुख बाजे

चपल नयन कुंडल झलके

मोरमुकुट पिताम्बर सोहे

मन्द मन्द माधरी मुसके

माधो एक माधो दो माधो तीन

माधो चार माधो पांच माधो छःह

माधो सात माधो आठ माधो नौ

4) कृष्ण कन्हैया नागर नटवर

यमुना के तट पर निरत करत पग

घुंघरू बांध घुम छन नन छननन

राग ताल बरसे नाच दिखावत

नारायण के मन को भावत

नादिगदिगदिग थोदिगदिगदिग

त्राम त्राम तततत

नदिगदिगदिग थोदिगदिगदिग

त्राऽम त्राऽम तततत

नदिगदिगदिग थोदिगदिगदिग

त्राऽम त्राऽम तततत ताऽ ऽताऽ ताऽ ता ता

5) ठुमक ठुमक चलत चाल,

यमुना के नंद लाल

झपक झपक झमक झमक

झुक झुक झुक देखे लाल

दधकी मटकी तोड़ दई, फोरि दई

ऐसो ढीठ चतुर गोपाल

धगिन तगिन, धगिन तगिन

धगिन तऽत थेई

धगिन तगिन, धगिन तगिन

धगिन तऽत थेई

धगिन तगिन, धगिन तगिन

धगिन तऽत थेई

ठुमरी एवं राधा–कृष्ण प्रेम का चित्रण

ठुमरी भारतीय नृत्य एवं संगीत जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कत्थक नृत्य में ठुमरी भाव पक्ष का एक अहम हिस्सा है। कत्थक नृत्य में ठुमरी में राधा–कृष्ण का प्रेम भाव विद्यमान रहता है।

राधा–कृष्ण प्रेम भाव पर आधारित ठुमरियां

ठुमरी–(1)

स्थायी चलो हटो छोड़ो मेरी बइयां श्याम

तुम तो हठीले बड़े

जोरी करत हो, देख रही सब

सखियां श्याम

चलो हटो छोड़ो मोरी ....

अंतरा गगरी फोरी, चूड़ियां तोड़ी

लाज आवत मोहे

पडूं पइयां

चलो हटो छोड़ो मोरी.............

ठुमरी–(2)

स्थायी मोहे छेड़ो न, छेड़ो न, नंद के सुनो छैल

	मोहे छेड़ो न, छेड़ो न ....
अंतरा 1)	मग बीच रोके करत बरजोरी
	कंकरी मारी गगर मोरी फोड़ी
	कासे कहूं घर जाने दे, रोके न छैल
	मोहे छेड़ो न.....................
अंतरा 2)	गरबा लगाए, मुझको सताए
	चमके बिजुरी बदरा घिर आए
	पइंया पडूं घर जाने दे, रोके न छैल
	मोहे छेड़ो न ....

ठुमरी–(3)

स्थायी	छोड़ो–छोड़ो डगरिया हो श्याम
	सारा गोकुल करेगा बदनाम
	छोड़ो–छोड़ो डगरिया हो श्याम
अंतरा	जाने दे मोहे मोहन रसिया
	देख रही सब नार
	सारा गोकुल करेगा बदनाम
	छोड़ो–छोड़ो ....

ठुमरी–(4)

स्थायी –	मोरी आली, मैं पनियाँ कैसे जांऊ री।।
	सखी री, नागर नटखट मुकुट वारौ,
	मोसों करत ढिठाई बंसीबट यमुनातट,
	पनियां कैसे लाऊं री।।
अंतरा	उझक उझक और उचक उचक झांके री 'अखतर',
	तट पनघट बंसीबट यमुनातट,

पनियाँ कैसे जाऊँ री।

अन्य बहुत से उदाहरण हैं जहाँ ठुमरियों में राधा–कृष्ण छेड़–छाड़ देखने को मिलती है।

गतनिकास व गतभाव में राधा–कृष्ण प्रेम–चित्रण

कत्थक नृत्य में द्रुत लय में पलटे लेकर विभिन्न पात्रों का अभिनय दर्शाया जाता है। अनेक प्रकार की गतें नाची जाती है। गतों में मुरली की गत, मटकी की गत, घूंघट की गत का संबंध राधा–कृष्ण से है। कत्थक नृत्यकार चार मात्रा (द्रुत लय) में पलटा लेकर विशेष अवस्था जैसे मुरली, मटकी या घूंघट लेकर निकलता है फिर उसी को वह विभिन्न तरीके से स्थापित करता हुआ उसका निकास करता चलता है। अंत में तिहाई लगाकर अगली गत का प्रदर्शन करता है।

गतभाव में नृत्यकार किसी कथानक को लेकर उस पर अभिनय करता है व स्वयं ही अनेक पात्रों का अभिनय करके पूरी कथा का भाव प्रस्तुत करता है। पलटा लेते ही पात्र बदल जाता है। कत्थक नृत्य में माखन चोरी, गोवर्धन लीला, कालियादमन, चीरहरण, होली आदि गतभाव भगवान श्री कृष्ण से संबंध रखते हैं। 'चीरहरण' व 'होली' गतभाव व 'पनघट की छेड़छाड़ में राधा–कृष्ण प्रेम अंकित होता है।

इस प्रकार सम्पूर्ण कत्थक नृत्य में राधा–कृष्ण प्रेम की अनुपम छटा विद्यमान रहती है।

यो नृत्यति प्रहृटात्मा भावैरत्यन्त भक्तितः।

स निर्दहति पापानि जन्मान्तर शतैरपि ।।

– द्वारका महात्म्य

अर्थात् जो जीवात्मा श्रद्धा भाव से भक्तिपूर्वक नृत्य करती है उसके जन्म–जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं, वह मोक्ष अर्थात् साक्षात हरि को प्राप्त होती है।